लक्ष्मी-गणेश की पूजा के पीछे एक गहरा रहस्य



धन, सफलता और ऐश्वर्य का पूर्ण फल तभी मिलेगा, जब वह लक्ष्मी और गणेश की एक साथ आराधना करेंगे।

हिंदू धर्म में दीवाली के पर्व को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस अवसर पर माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा-अर्चना करने का विधान है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, लक्ष्मी और गणेश की साधना करने से सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है और धन लाभ के योग बनते हैं। माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा अत्यंत फलदायी और कल्याणकारी मानी जाती है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि मां लक्ष्मी का गणपति बप्पा से क्या संबंध है? गणेश पुराण में बताया गया है कि मां लक्ष्मी ने भगवान गणेश को अपना दत्तक पुत्र बनाया था। अब ऐसे में सवाल उठता है कि धन की देवी मां लक्ष्मी ने गणेश जी को दत्तक पुत्र क्यों बनाया? पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक बार बैकुंठ धाम में जगत के पालनहार भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी के बीच चर्चा हो रही थी। चर्चा के दौरान देवी ने भगवान विष्णु से कहा, मैं अपने भक्तों को धन-धान्य, ऐश्वर्य और सौभाग्य प्रदान करती हूं। मेरी कृपा से ही भक्तों को जीवन में सभी तरह के सुखों की प्राप्ति होती है। इसलिए मेरी पूजा ही सर्वश्रेष्ठ है। भगवान विष्णु उनका यह अहंकार समझ गए। प्रभु ने देवी के अहंकार को दूर करने का फैसला लिया और कहा, देवी, आप श्रेष्ठ जरूर हैं, लेकिन आपका नारीत्व अभी भी अधूरा है। भगवान विष्णु ने आगे कहा, जब तक किसी स्त्री को मातृत्व का सुख नहीं मिलता, तब तक उसे पूर्ण नहीं माना जाता। यह बात सुनकर मां लक्ष्मी अत्यंत दुखी हुईं। इसके बाद वे माता पार्वती के पास पहुंचीं और उन्हें अपनी यह पीड़ा बताई। तब माता पार्वती ने अपने पुत्र गणेश को उन्हें दत्तक पुत्र के रूप में सौंप दिया। भगवान गणेश को पुत्र के रूप में पाकर मां लक्ष्मी अत्यंत प्रसन्न हुईं। उन्होंने उसी समय यह वरदान दिया कि किसी भी भक्त को धन, सफलता और ऐश्वर्य का पूर्ण फल तभी मिलेगा, जब वह लक्ष्मी और गणेश की एक साथ आराधना करेगा। यही वजह है कि दीवाली के दिन मां लक्ष्मी के साथ भगवान गणेश की उनके दत्तक पुत्र के रूप में पूजा-अर्चना करने का विधान है। सनातन परंपरा में मां लक्ष्मी के साथ उल्लू और मोर, दोनों का संबंध बहुत गहरा है। उल्लू अंधेरे में भी देख सकता है, जिससे हमें हमेशा चौकन्ना रहने, आगे की सोचने और समझदारी से काम लेने की सीख मिलती है। वहीं दूसरी तरफ, मोर सुंदरता और पवित्रता की निशानी है। यह बुराई को मिटाने और सादगी के साथ जीवन में संपन्नता लाने का प्रतीक है। मां लक्ष्मी द्वारा गणेश जी को दत्तक पुत्र बनाने से यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति को जीवन में दिखावे या अहंकार में आकर अपना विवेक और समझदारी नहीं खोनी चाहिए। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान गणेश की साधना करने से सही फैसले लेने की बुद्धि मिलती है और शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। मां लक्ष्मी की पूजा के दौरान लक्ष्मी-विनायक मंत्र का जप जरूर करना चाहिए। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस मंत्र का जप करने से धन लंबे समय तक टिकता है और बचत में वृद्धि होती है। साथ ही नौकरी, करियर या व्यापार में आ रही अड़चनों को भगवान गणेश दूर करते हैं।

गणेश पुराण में बताया गया है कि मां लक्ष्मी ने भगवान गणेश को अपना दत्तक पुत्र बनाया था।

खूनी व बादी बवासीर में बेहद असरकारक
अर्शविदा कैप्सूल


सुविचार
भविष्य अज्ञात है, लेकिन इसे बेहतर बनाने की जिम्मेदारी आपकी है...
• 100% आयुर्वेदिक • सुरक्षित • असरदार
Customer Care : 9628078000
www.rphealthgroup.com
Also available at TATA 1mg amazon Flipkart



अपनी जिंदगी
खोज से अनुभूति तक

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

जीवन प्रेम से उत्पन्न होता है और जीवन प्रेम की ही तलाश करता है। जीवन का लक्ष्य भी प्रेम है, और जीवन प्रेम से ही कायम रहता है। इस ग्रह पर ऐसा कोई भी प्राणी या जीवित इकाई नहीं है, जिसने प्रेम को न जाना हो या जो प्रेम से रहित हो। यदि प्रेम सृष्टि में सर्वत्र विद्यमान है, तो फिर प्रेम की तलाश क्यों है? हम प्रेम को क्यों खोजते हैं? जब ये प्रश्न मानव-मन को उद्वेलित करने लगते हैं, तभी किसी की आध्यात्मिक यात्रा का प्रारंभ होता है। प्रेम क्या है? भावनाओं का वर्णन करना सबसे कठिन कार्य है-किसी भी भावना का। भावनाओं को शब्दों में बाँधना या किसी को बौद्धिक रूप से यह समझाना सरल नहीं है कि वह भावना क्या है। यह एक अत्यंत सूक्ष्म और गहन अनुभव है। प्रेम इस सृष्टि का मूल आधार है। वह कभी समाप्त नहीं हो सकता; वह सदैव विद्यमान रहता है। प्रेम दीजिए-वह कई गुना होकर आपके पास लौटेगा। प्रेम वास्तव में कोई मार्ग नहीं है; प्रेम स्वयं ही घर है। प्रेम आपको आपके मूल स्वरूप में वापस ले आता है। प्रेम कोई क्रिया या कर्म नहीं है, यह एक अवस्था है-एक परिणाम है। तत्पश्चात प्रश्न उठता है- मैं इसे कैसे प्राप्त करूँ? यह इच्छा का विषय नहीं हो सकता। जब इच्छाएँ शांत हो जाती हैं, तभी प्रेम का अनुभव संभव होता है। प्रेम को इच्छा का विषय न बनाइए। इच्छा का स्वभाव है-अभी नहीं, भविष्य में कुछ। यह बेचैनी उत्पन्न करती है, जबकि प्रेम का प्रभाव शीतलता से परिपूर्ण होता है। प्रेम को अपनी इच्छाओं का लक्ष्य न बनाइए। जब इच्छाएँ शांत हो जाती हैं, तब यह अनुभव होता है कि प्रेम तो यहीं है। प्रेम सभी इच्छाओं का अंतिम लक्ष्य है, और जब उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता, तब घृणा और क्रोध उत्पन्न होते हैं। प्रेम की इच्छा अन्य अपूर्णताओं को जन्म देती है, जैसे निराशा। चाहे इच्छा पूर्ण हो या अपूर्ण, वह अंततः निराशा ही लाती है-यह इच्छा का स्वभाव है। प्रेम को केवल उसकी इच्छा करने से प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रेम तो इच्छाओं के समाप्त होने पर ही प्रकट होता है। प्रेम से विरह उत्पन्न होता है, और विरह ही भगवान है; प्रेम ही भगवान है। विरह के बिना जीवन अर्थहीन हो जाता है। विरह उत्पन्न करना गुरु का कार्य है। लोग संसार के लिए दुःखी होते हैं, किंतु यदि संसार के दुःख से ऊपर उठकर भगवान के लिए विरह उत्पन्न हो जाए, तब साधना पूर्ण हो जाती है। इसलिए विरह का जन्म होना अत्यंत शुभ है।



धनलक्ष्मी के आगमन का पर्व धनतेरस

दीपोत्सव पर्व पर धनतेरस का पावन पर्व काफी हर्ष व उल्लास के साथ मनाने की पौराणिक परम्परा है। धनतेरस से ही दीपावली पर्व का शुभारम्भ हो जाता है। इस बार 6 नवम्बर, शुक्रवार, कार्तिक कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन धनतेरस का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। ज्योतिषविद् विमल जैन ने बताया कि कार्तिक कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि 6 नवम्बर, शुक्रवार को दिन में 10 बजकर 31 मिनट पर लगेगी, जो कि 7 नवम्बर, शनिवार को दिन में 10 बजकर 49 मिनट तक रहेगी, तत्पश्चात् चतुर्दशी तिथि लग जाएगी। हस्त नक्षत्र 5 नवम्बर, गुरुवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 3 बजकर 56 मिनट से 6 नवम्बर, शुक्रवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 4 बजकर 44 मिनट तक रहेगा, तत्पश्चात् चित्रा नक्षत्र प्रारम्भ हो जाएगा। विष्कुंभ योग 5 नवम्बर, गुरुवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 5 बजकर 10 मिनट से 6 नवम्बर, शुक्रवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 4 बजकर 10 मिनट तक रहेगा। धनतेरस के दिन आरोग्य के देवता आयुर्वेद शास्त्र के जनक श्री धन्वन्तरि जी का जन्म महोत्सव भी धूम-धाम से मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि समुद्र मन्थन के समय धन्वन्तरि जी अमृत का कलश लेकर अवतरित हुए थे। भगवान धन्वन्तरि जी को आयुर्वेद के प्रवर्तक तथा श्रीविष्णु भगवान के अवतार के रूप में माना जाता है। इस दिन धन्वन्तरि जी की पूजा-अर्चना से आरोग्य-सुख तथा उत्तम स्वास्थ्य का सुयोग बनता है। व्यवसायी एवं व्यापारी वर्ग शुभ मुहूर्त में बही-खाता एवं प्रयोग में आनेवाली अन्य वस्तुएँ भी खरीदते हैं। धनतेरस को सम्पूर्ण दिन में अभिजीत मुहूर्त दिन में 11 बजकर 36 मिनट से 12 बजकर 24 मिनट तक सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त माना गया है। धन-सम्पत्ति के लिए धनाधिपति श्रीकुबेर देवता की भी पूजा करनी चाहिए। देवकक्ष में पूजा स्थल पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिए। पूजा का सर्वोत्तम समय (काशी में) वृषभ लग्न सायं 5 बजकर 45 मिनट से रात्रि 7 बजकर 41 मिनट तक रहेगा। प्रदोषकाल का समय विभिन्न शहरों का अलग-अलग होता है, जो कि स्थानीय पंचांगों में दिया रहता है। धनतेरस के दिन शुरू किए हुए शुभकार्यों में स्थायी लाभ के साथ ही अच्छी सफलता का सुयोग बनता है। घर, कार्यस्थल व व्यावसायिक प्रतिष्ठान को आलोकित (प्रकाशमय) रखना चाहिए। धनतेरस का पर्व अपने पारिवारिक धार्मिक परम्परा के साथ मनाना शुभ रहता है।

कलश की अवधारणा को लेकर नये बर्तन और आभूषण खरीदना शुभ फलकारी



धनतेरस के पावन पर्व पर लक्ष्मी-गणेश जी मूर्ति के साथ ही पूजन सामग्री खरीदने की परम्परा है। इस बर्तन के अतिरिक्त नवीन वस्त्र, रजत व स्वर्ण के आभूषण व सोने-चाँदी के सिक्के एवं अन्य मांगलिक वस्तुएँ खरीदने से सौभाग्य में अभिवृद्धि होती है। आज के दिन बर्तन खरीदने से अधिक लाभ एवं लक्ष्मी का स्थायी निवास मिलता है। सायंकाल स्नान के पश्चात् स्वच्छ (धुले हुए) वस्त्र धारण करके अपने आराध्य देवी-देवता की पूजा-अर्चना के बाद प्रदोषकाल व शुभ मुहूर्त में संकल्प लेकर श्रीगणेश जी, श्रीलक्ष्मीजी तथा धन के देवता श्रीकुबेर जी की श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ पूजा-अर्चना करनी चाहिए। पूजा-अर्चना में काले-नीले रंग के वस्त्र धारण नहीं करने चाहिए। आज के दिन खरीदे गए नवीन बर्तन में उत्तम मिष्ठान्न, फल एवं मेवे आदि माँ भगवती लक्ष्मीजी को अर्पित करने चाहिए। देशी घी का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए। अखण्ड ज्योति जलाने की भी मान्यता है। भगवती लक्ष्मीजी की पूजा कमल के फूल से करनी चाहिए तथा कमलगट्टा के माला से श्रीलक्ष्मीजी के मन्त्र 'श्रीं', 'ॐ श्रीं नमः', 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं' अथवा 'ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः' का जप करना लाभकारी रहता है।

यम के निमित्त प्रज्वलित करें दीपक

धनतेरस से दीपावली या भैयादूज तक सायंकाल प्रदोषकाल में घर के प्रवेश द्वार के बाहर दोनों ओर यम के निमित्त एक पात्र में अन्न रखकर उसके ऊपर दीप दान करने से यमराज भी प्रसन्न होते हैं, इसको यमदीप कहा जाता है। दीपक की चावल, फूल, धूप, सुगन्ध आदि से पूजा-अर्चना करने से जीवन में अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता।

सुख-समृद्धि के लिए जन्म तारीख/राशि के अनुसार करें खरीददारी

जन्म तारीख के अनुसार- जन्मतिथि किसी भी माह की 1, 10, 19 व 28 हो, उनके लिए लाल, गुलाबी, केसरिया। 2, 11, 20 व 29 वालों के लिए सफेद व क्रीम। 3, 12, 21 व 30 के लिए सभी प्रकार के पीला व सुनहरा पीला। 4, 13, 22 व 31 के लिए सभी प्रकार के चमकीले, चटकीले मिले-जुले व साथ ही हल्का स्लेटी रंग। 5, 14 व 23 के लिए हरा, धानी व फिरोजी रंग। 6, 15 व 24 के लिए सफेद व चमकीला सफेद अथवा आसमानी नीला। 7, 16 व 25 के लिए चमकीला, स्लेटी व ग्रे रंग। 8, 17 व 26 के लिए काला, ग्रे व नीला रंग। जबकि 9, 18 व 27 के लिए लाल, गुलाबी व नारंगी रंग।

राशि के अनुसार करें रंगों का चयन-मेष-लाल, गुलाबी एवं नारंगी। वृषभ-सफेद एवं क्रीम। मिथुन-हरा व फिरोजी। कर्क-सफेद व क्रीम। सिंह-केसरिया, लाल व गुलाबी। कन्या-हरा व फिरोजी। तुला-सफेद व हल्का नीला। वृश्चिक-नारंगी, लाल व गुलाबी। धनु-पीला व सुनहरा। मकर व कुम्भ-भूरा, स्लेटी व ग्रे। मीन-पीला व सुनहरा।

रम्भा एकादशी

भारतीय सनातन परम्परा के हिन्दू धर्मग्रन्थों में हर माह के विशिष्ट तिथि की खास पहचान है। सभी तिथियों पर देवी-देवताओं की विशेष पूजा-अर्चना करने की मान्यता है। तिथि विशेष पर पूजा-अर्चना करने पर अभिलाषा की पूर्ति का सुयोग बनता है। इसी क्रम में रम्भा एकादशी का व्रत 5 नवम्बर को रखा जाएगा। रम्भा एकादशी के दिन आकाश में दीपदान करने की भी महिमा है। प्रख्यात ज्योतिषविद् विमल जैन ने बताया कि कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की एकादशी तिथि 4 नवम्बर को दिन में 11 बजकर 04 मिनट पर लगेगी जो कि 5 नवम्बर को दिन में 10 बजकर 36 मिनट तक रहेगी। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र 4 नवम्बर को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 3 बजकर 31 मिनट से 5 नवम्बर, गुरुवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 3 बजकर 56 मिनट तक रहेगा। ऐन्द्रयोग सम्पूर्ण दिन रहेगा। जिसके फलस्वरूप उदयातिथि के अनुसार 5 नवम्बर को रम्भा एकादशी का व्रत रखा जाएगा। रम्भा एकादशी का व्रत महिला पुरुष दोनों के लिए समानरूप से फलदायी है। व्रत के दिन व्रतकर्ता को ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपने समस्त दैनिक कृत्यों से निवृत्त होकर गंगा-स्नानादि करना चाहिए। गंगा-स्नान यदि सम्भव न हो तो घर पर ही स्वच्छ जल से स्नान कर स्वच्छ (धुले हुए) वस्त्र धारण करना चाहिए। अपने आराध्य देवी-देवता की पूजा-अर्चना के पश्चात् रम्भा एकादशी के व्रत का संकल्प लेना चाहिए।

धनतेरस की खरीदारी में शामिल करें छह शुभ वस्तुएं

धनतेरस पर सोना और चांदी खरीदने की परंपरा काफी पुरानी है। माना जाता है कि इस दिन खरीदे गए सोने-चांदी से घर में लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है। यदि सोना खरीदना संभव न हो तो चांदी का सिक्का या छोटी वस्तु भी खरीदी जा सकती है। नए बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है। खासकर पीतल, तांबा या स्टील के बर्तन खरीदने की परंपरा है। धार्मिक मान्यता के अनुसार नए बर्तन घर में समृद्धि और शुभता लेकर आते हैं। झाड़ू को माता लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। धनतेरस के दिन नई झाड़ू खरीदकर घर लाने से आर्थिक परेशानियां दूर होने और घर की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होने की मान्यता है। कई लोग दीपावली की सफाई के लिए इसी दिन नई झाड़ू खरीदते हैं। धनिया के बीज खरीदना भी बेहद शुभ माना जाता है। पूजा के बाद इन बीजों को घर के बगीचे या गमले में बोया जाता है। मान्यता है कि इससे धन और समृद्धि में वृद्धि होती है। अगर घर में नई लक्ष्मी-गणेश प्रतिमा स्थापित करनी हो तो धनतेरस का दिन बेहद शुभ माना जाता है। दीपावली पूजन के लिए इस दिन प्रतिमा खरीदना शुभ फलदायी माना जाता है और इससे घर में सकारात्मकता बनी रहती है। धार्मिक मान्यताओं में कौड़ी और शंख को माता लक्ष्मी से जुड़ा हुआ माना गया है। धनतेरस पर इन्हें घर लाकर पूजा स्थल में रखने से आर्थिक उन्नति और शुभ फल की प्राप्ति होने की मान्यता है।

ब्रह्मा मंदिर- तीन कमल पुष्पों से जुड़ी पौराणिक कथा

राजस्थान के पुष्कर को हिंदू धर्म के प्रमुख और पवित्र तीर्थस्थलों में गिना जाता है। यहां बना ब्रह्मा मंदिर देश के उन खास मंदिरों में से एक है, जहां भगवान ब्रह्मा की पूजा-अर्चना होती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, पुष्कर का संबंध ब्रह्मदेव के यज्ञ और तीन कमल के फूलों से जुड़ा है। पुष्कर सरोवर, ब्रह्मा मंदिर और माता गायत्री व सावित्री के मंदिर इस जगह को विशेष धार्मिक महत्व देते हैं। यहां आने वाले भक्त सबसे पहले पुष्कर सरोवर के पवित्र घाटों पर स्नान करते हैं। इसके बाद ब्रह्मदेव के दर्शन करते हैं और माता गायत्री, सावित्री व सरस्वती के मंदिरों में पूजा-अर्चना कर अपने परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना करते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, एक बार भगवान ब्रह्मा यज्ञ करने के लिए किसी पवित्र स्थान की तलाश कर रहे थे। इसके लिए उन्होंने तीन कमल के फूल आकाश से पृथ्वी पर गिराए। ये तीनों फूल अलग-अलग स्थानों पर गिरे और वहां पवित्र तीर्थों की स्थापना हुई। पहले फूल



के गिरने से ज्येष्ठ पुष्कर, दूसरे से मध्य पुष्कर और तीसरे से कनिष्ठ पुष्कर तीर्थ बना। मान्यता है कि ब्रह्मदेव ने ज्येष्ठ पुष्कर को अपने यज्ञ के लिए चुना था। पुष्कर सरोवर में स्नान करने के बाद श्रद्धालु ब्रह्मा मंदिर पहुंचते हैं। यहां भक्त 'ब्रह्मदेवाय नमः' मंत्र का जाप करते हुए भगवान के दर्शन करते हैं। मंदिर परिसर में चांदी से बनी कछुए की प्रतिमा आकर्षण का केंद्र है। इसके अलावा यहां एक छोटा चांदी का मंदिर भी है, जिसमें भगवान ब्रह्मा की संगमरमर से बनी सुंदर प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के बाहर ब्रह्मदेव के वाहन हंस की प्रतिमा भी देखने को मिलती है। भक्त यहां इंद्र और भगवान शिव की प्रतिमाओं के दर्शन भी करते हैं। पुष्कर सरोवर को हिंदू धर्म के पांच प्रमुख पवित्र सरोवरों में विशेष स्थान प्राप्त है। मान्यता है कि इसमें स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है और आत्मिक शांति प्राप्त होती है। ब्रह्मा मंदिर के दर्शन के बाद श्रद्धालु पास ही स्थित माता गायत्री के मंदिर पहुंचते हैं। यहां भक्त माता से अपनी मनोकामनाएं पूरी करने और परिवार की खुशहाली की प्रार्थना करते हैं। पुष्कर यात्रा के दौरान श्रद्धालु पर्वत पर बने माता सावित्री के मंदिर भी जाते हैं।

कहां हैं महाभारत के अश्वत्थामा

महाभारत की कहानियों में कुछ ऐसे पात्र हैं, जिनका जिक्र आज भी लोगों के मन में उत्सुकता पैदा करता है। इन्हीं में से एक हैं अश्वत्थामा। मान्यता है कि महाभारत युद्ध के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें ऐसा श्राप दिया था, जिसके कारण उन्हें हजारों साल तक धरती पर भटकना पड़ेगा। कहा जाता है कि अश्वत्थामा आज भी जीवित हैं और अलग-अलग जगहों पर दिखाई देते हैं। मध्य प्रदेश के असीरगढ़ किले से लेकर कई प्राचीन शिव मंदिरों तक उनके दिखाई देने की कहानियां प्रचलित हैं। हालांकि, उनके आज भी जीवित होने का कोई ऐतिहासिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर



अश्वत्थामा कौन थे और उनसे जुड़ी ये मान्यताएं कहां से आईं? अश्वत्थामा महाभारत के प्रमुख पात्रों में से एक थे। वे गुरु द्रोणाचार्य और कृपी के पुत्र थे। उनके पिता कौरवों और पांडवों दोनों के गुरु थे। अश्वत्थामा को युद्ध कला में निपुण और शक्तिशाली योद्धा माना जाता था। वे कौरवों की ओर से महाभारत के युद्ध में शामिल हुए थे। उनके पास दिव्य अस्त्रों का ज्ञान भी था। महाभारत में उन्हें एक ऐसे योद्धा के रूप में दिखाया गया है, जो अपने पिता की मृत्यु के बाद क्रोध में आकर युद्ध के नियमों का उल्लंघन करता है। महाभारत की कथा के अनुसार, युद्ध के अंतिम दिनों में अश्वत्थामा के पिता द्रोणाचार्य की मृत्यु हो गई थी। इसके बाद वे बदले की भावना से भर गए। रात के समय उन्होंने पांडवों के शिविर में जाकर सो रहे द्रौपदी के पांचों पुत्रों की हत्या कर दी। इस घटना से पांडव बेहद क्रोधित हो गए। बाद में अश्वत्थामा और अर्जुन के बीच दिव्य अस्त्रों का प्रयोग हुआ। जब अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र का इस्तेमाल किया, तब स्थिति गंभीर हो गई। मान्यता के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा को उनके इस अपराध के लिए श्राप दिया। कहा जाता है कि उनके माथे पर मौजूद मणि निकाल ली गई और उन्हें लंबे समय तक कष्ट सहते हुए धरती पर भटकने का श्राप मिला। अश्वत्थामा को लेकर भारत के कई हिस्सों में अलग-अलग कहानियां प्रचलित हैं। इनमें सबसे ज्यादा चर्चा मध्य प्रदेश के बुरहानपुर में स्थित असीरगढ़ किले की होती है। यह किला सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला में स्थित है। यहां एक प्राचीन शिव मंदिर भी है। मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जिला प्रशासन की वेबसाइट के मुताबिक, इस मंदिर से जुड़ी मान्यता है कि अश्वत्थामा यहां भगवान शिव की पूजा करने आते थे। कहा जाता है कि सुबह मंदिर में शिवलिंग पर फूल और चंदन चढ़ा हुआ मिलता है। हालांकि, इन घटनाओं की पुष्टि नहीं हुई है। इसके अलावा नर्मदा नदी के आसपास के इलाकों में भी अश्वत्थामा को देखे जाने की कहानियां सुनने को मिलती हैं। कुछ स्थानीय मान्यताओं में दावा किया जाता है कि वे जंगलों और सुनसान जगहों पर भटकते हैं। हालांकि, इन दावों को साबित करने वाला कोई विश्वसनीय प्रमाण मौजूद नहीं है।

नरक चतुर्दशी पर अभ्यंग स्नान की परंपरा का विशेष महत्व

नरक चतुर्दशी पर अभ्यंग स्नान की एक बेहद खास और प्राचीन परंपरा निभाने का विधान है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठकर तिल के तेल और उबटन से स्नान किया जाता है। माना जाता है कि ऐसा करने से पापों और अकाल मृत्यु के भय से छुटकारा मिलता है।



हिंदू धर्म में नरक चतुर्दशी के पर्व का बहुत महत्व है। इसे दिवाली से ठीक एक दिन पहले मनाया जाता है, जिसे छोटी दिवाली या रूप चौदस भी कहते हैं। नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय होने से पहले अभ्यंग स्नान करने का विधान है। इसके अलावा इस दिन यमराज और भगवान कृष्ण की पूजा-अर्चना की जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, पूजा करने से सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है और शुभ परिणाम मिलते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर नरक चतुर्दशी के दिन अभ्यंग स्नान क्यों किया जाता है और इसके पीछे की क्या वजह है? हिंदू धर्म में नरक चतुर्दशी पर अभ्यंग स्नान की एक बेहद खास और प्राचीन परंपरा निभाने का विधान है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठकर तिल के तेल और उबटन से स्नान किया जाता है। माना जाता है कि ऐसा करने से पापों और अकाल मृत्यु के भय से छुटकारा मिलता है। पौराणिक कथा के अनुसार, नरकासुर ने इंद्रदेव को हराकर उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया था। इसके बाद नरकासुर ने तीनों लोकों पर कब्जा कर लिया था और वह देवताओं व ऋषियों पर अत्याचार करने लगा। इसलिए कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि पर भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वधकिया। युद्ध समाप्त होने के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने शरीर पर लगे रक्त को साफ करने के लिए तेल और उबटन से स्नान किया था, जिसे अभ्यंग स्नान कहा जाता है। इसलिए नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले अभ्यंग स्नान करने का विशेष महत्व है। नरकासुर वध का वर्णन श्रीमद्भागवत पुराण और विष्णु पुराण में मिलता है। नरक चतुर्दशी ७ को है। इस दिन सूर्योदय सुबह ६ बजकर ३७ मिनट पर होगा। इसलिए इस समय से पहले ही अभ्यंग स्नान कर लें। नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठें और दिन की शुरुआत देवी-देवता के ध्यान से करें। इसके बाद शरीर और बालों में तिल के तेल की अच्छी तरह मालिश करें। फिर हल्दी, चंदन और बेसन से बना उबटन लगाएं। इसके बाद साफ पानी से स्नान करें।